

श्री आत्मानंदजी म.

का

व्यक्तित्व एवं कृतित्व



(म. स. विश्व विद्यालय-बड़ौदाकी पी.एच.डी. उपाधी निमित्त प्रस्तुत)

(शोध प्रबन्ध)

V A S

V A S

V A S

V A S

V A S

V A S

V A S

I A I

I A I

I



निर्देशिका :

डॉ. प्रेमलता बाफना

एम.ए.पी.एच.डी. साहित्यरत्न

रीडर, हिन्दी विभाग

कला संकाय, म.स. विश्व विद्यालय

बड़ौदा

प्रस्तुत करीं :

श्री किरणयशाश्रीजी म.

एम.ए. साहित्यरत्न

शोधछात्र, हिन्दी विभाग

कला संकाय, म.स. विश्व विद्यालय

बड़ौदा

अप्रैल - १९९७

पालणपुरनिवासी दोसी काळीदास सांकळचंद तरफथी तेमनां मातुश्री
स्व. वाई परसनवाईना स्मरणार्थे.

| | | |
|----------------------|------------|---|
| अथवर्गणा१ | अथवर्गणा२ | अथवर्गणास्वरूप इहलोकसर्वत्रलोक लगुफलिकरीनस्याहे तेपुत्रलकिम२हे |
| कालवर्गणा३ | नाववर्गणा४ | तेकदीयिहे पुत्रलकीन्यारीन्यारीवर्गणाहे |
| उदारीकयोग्यवर्गणा५ | | वर्गणा३हे सरीषा२अथनाथोकडाकहीए |
| उदारिकयोग्यवर्गणा६ | | तेवर्गणा५अ१दोष२काल३नावशीभवार४ |
| उज्याऽयोग्यवर्गणा७ | | कारेहे तेकिमएकपरमाणुएकलाइमजि |
| वैकिय योग्यवर्गणा८ | | तनापरमाणुयहेतेदनीएकवर्गणाजाननी |
| उज्याऽयोग्यवर्गणा९ | | दोदो परमाणुमिलरहेतेदनीइजीवर्गणा |
| आहारकयोग्यवर्गणा१० | | इमतीनतीनतीजी एवंवार२नीइमसेखा |
| उज्याऽयोग्यवर्गणा११ | | तेपरमाणुये असंखपरमाणुये अंतपर |
| तेजसयोग्यवर्गणा १२ | | माणुयेतेदनीन्यारी२वर्गणाजाननीइमअथ |
| उज्याऽयोग्यवर्गणा१३ | | वर्गणाअनतीतिअहेइतिअथवर्गणा१अथ |
| नाथायोग्यवर्गणा १४ | | हेवाश्रीनेपरमाणुया अघवामोटाअथ |
| उज्याऽयोग्यवर्गणा १५ | | केआकाशउदेउर एतेसर्वनीएकवर्गणा |
| आनघ्राणयोग्यवर्गणा१६ | | एमदोउदेउर एानीइजीवर्गणा इमतालो |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा१७ | | लेनाजालगअसंखउदेवाव्यापेतेदनीन्यारी |
| उज्याऽयोग्यवर्गणा १८ | | वर्गणादोवाश्रीअसंख्यातीइअहे२ तथाका |
| नाथायोग्यवर्गणा १९ | | लाश्रितेएकपरमाणु दोपरमाणुएवंतीनचा |
| उज्याऽयोग्यवर्गणा २० | | रसंखते असंख्यातेअनतेभरमाणुएफवेमि |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा२१ | | लरसिहे इनमेजितन्याकीएकसमयकीस्ति |
| मनयोग्यवर्गणा २२ | | तिहे तिनसर्वकीएकवर्गणा एकउदोसमय |
| उज्याऽयोग्यवर्गणा २३ | | रहेतेदनीइजीवर्गणाइमअसंखसमयस्ति |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा२४ | | तिलगअसंखानवर्गणाजानलेनीउतथा |
| कर्मयोग्यवर्गणा२५ | | वाश्री तेदिजपरमाणुया कितनेककालाकित |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा२६ | | नाहीधवला कितनानीला कितनापीला इमव |
| उज्याऽयोग्यवर्गणा २७ | | ए राधरसस्युर्करिजिपरमाणुन्यारी२इउ |
| कर्मयोग्यवर्गणा२८ | | तेसर्वनीन्यारी२अनतीवर्गणाजाननी४एव४व |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा२९ | | र्गणा तथा कितनाकपुत्रलस्कंधयो जापरमाणु |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा३० | | अनेवावरपरिणामहे तेउदारिकउदारीनअ |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा३१ | | योग्यहे तिसवास्तेउदारिकअयोग्यवर्गणा५ |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा३२ | | कहीये तिसथीअधिकतरपुत्रलस्कंध |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा३३ | | रकउदारीनेपरिणामावायोग्यहेतेउदारीकयो |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा३४ | | ग्यवर्गणा६ तेदहीअधिकपुत्रलमयस्कंध |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा३५ | | सुद्धमपरणामीहेतेउदारिकनेयोग्यनही अ |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा३६ | | हेवैकियाश्रीयोजापरमाणुहेअनेवावरप |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा३७ | | रिणामहे तिसवास्तेवैकियकेकाभनहीआ |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा३८ | | वैमसवास्तेउज्याऽयोग्यवर्गणाकहीये५ एवं |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा३९ | | कर्मयोग्यवर्गणाताइतीनतीनवर्गणाजाननी |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा४० | | एकअयोग्यइजीयोग्यतीजिउज्याऽयोग्य |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा४१ | | अथउदारिकवतएववर्गणा२०हेतीहेअ |
| अनघ्राणयोग्यवर्गणा४२ | | थ२२मीअववर्गणातास्वरूपकर्मवर्गणा |

ॐ

जैनाचार्य श्री १००८ श्रीविजयानंदसूरीश्वरजीकृत नवतत्त्वसंग्रहनी
स्वहस्ते लखेली प्रति उपरथी.